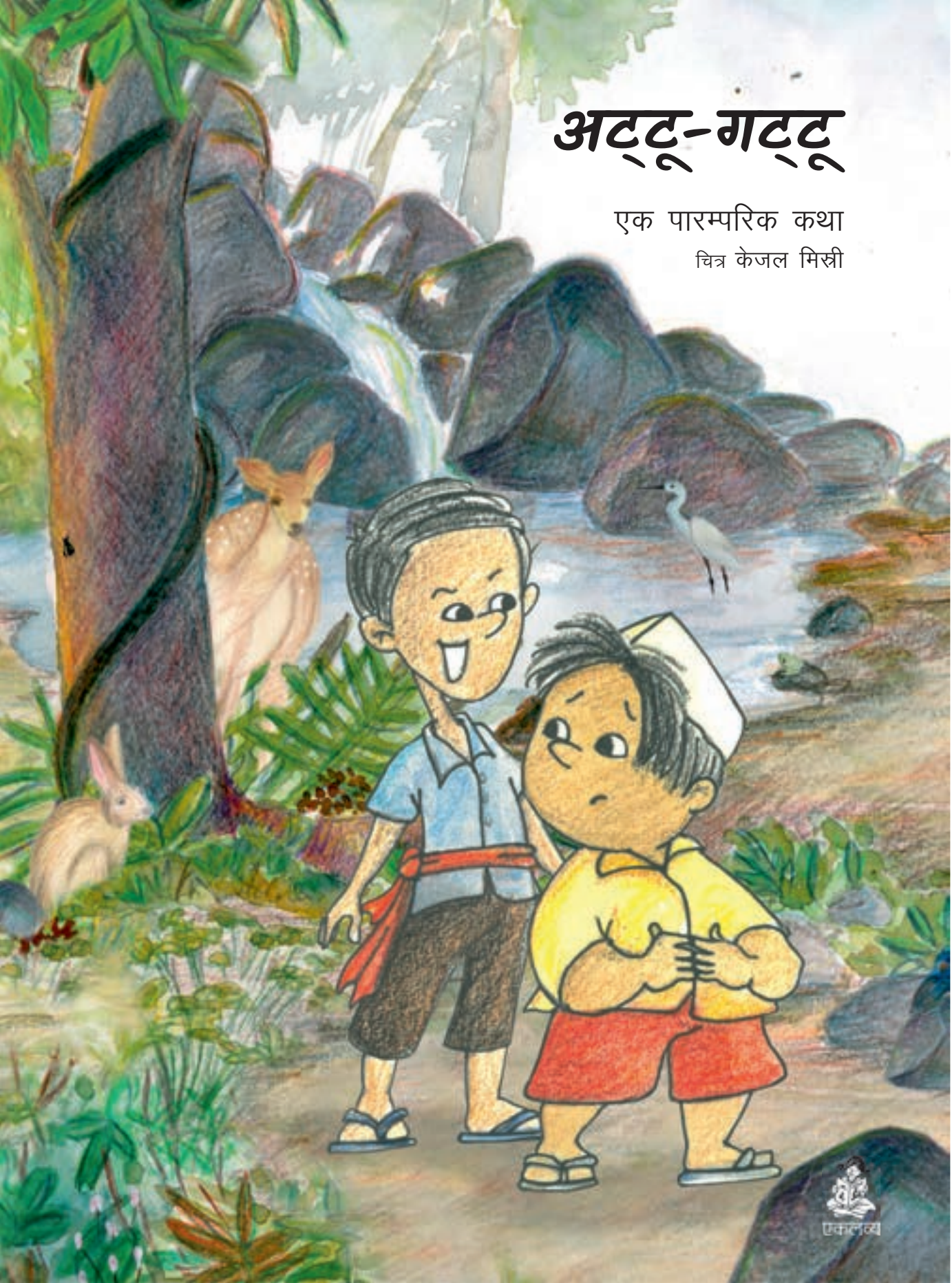


अटू-गटू

एक पारम्परिक कथा

चित्र केजल मिस्त्री



अटू-गटू



एक पारम्परिक कथा
मराठी से अनुवाद: अशोक रोकडे, वन्दना भूयर व निलेश निमकर
चित्र केजल मिस्त्री



अट्टु-गट्टु ATTU-GATTU

एक पारम्परिक कथा

मराठी से अनुवाद: अशोक रोकड़े, वन्दना भूयर व निलेश निमकर

चित्र: केजल मिस्त्री, क्रॉपमार्क्स डिज़ाइन, cropmarx@gmail.com



QUEST व एकलव्य

इस कहानी का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों से मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में QUEST एवं एकलव्य का जिक्र करना और सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य एवं QUEST से सम्पर्क करें।



यह किताब क्वालिटी एज्युकेशन सपोर्ट ट्रस्ट (QUEST), पुणे द्वारा विकसित की गई है। (www.quest.org.in) पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित

संस्करण: जून 2015 (3000 प्रतियाँ)

पहला पुनर्मुद्रण: फरवरी 2017 (3000 प्रतियाँ)

दूसरा पुनर्मुद्रण: जुलाई 2017 (3000 प्रतियाँ)

तीसरा पुनर्मुद्रण: फरवरी 2018 (3000 प्रतियाँ)

चौथा पुनर्मुद्रण: दिसम्बर 2018 (3000 प्रतियाँ)

पाँचवाँ पुनर्मुद्रण: जुलाई 2019 (3000 प्रतियाँ)

छटवाँ पुनर्मुद्रण: अक्टूबर 2020 (3000 प्रतियाँ)

सातवाँ पुनर्मुद्रण: जनवरी 2022 (3000 प्रतियाँ)

आठवाँ पुनर्मुद्रण: सितम्बर 2022 (5000 प्रतियाँ)

नौवाँ पुनर्मुद्रण: अक्टूबर 2023 (5000 प्रतियाँ)

कागज़: 100 gsm मेपलिथो और 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)

ISBN: 978-93-81337-71-4

मूल्य: ₹ 50.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**

जमनालाल बजाज परिसर जाटखेड़ी,

भोपाल - 462 026 (मप्र)

फोन: +91 755 297 7770-71-72

वेबसाइट: www.eklavya.in; ईमेल: books@eklavya.in

मुद्रक : बॉक्स कॉरोगेटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फ़ोन +91 755 258 7551



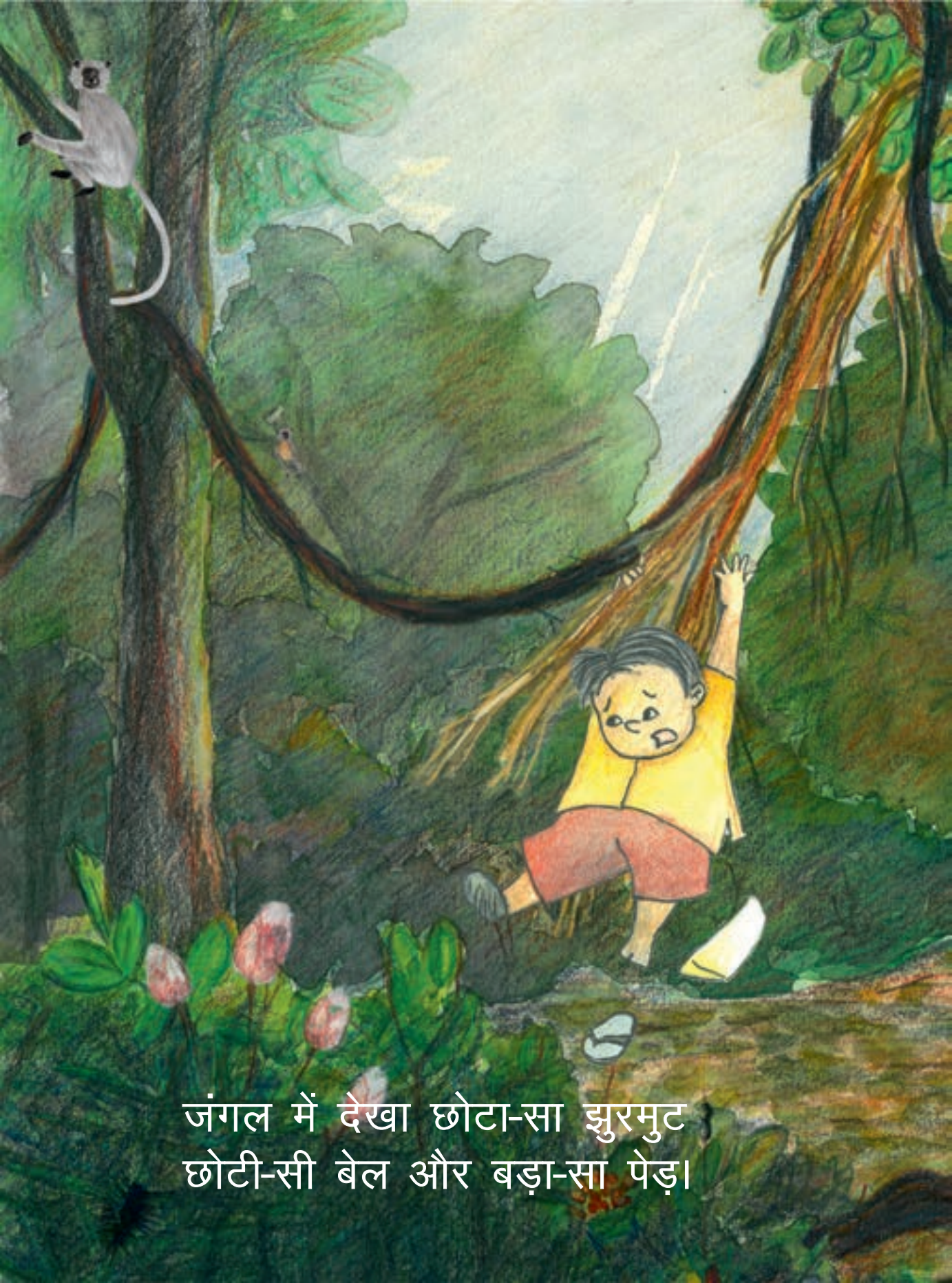
एक था अट्टू
एक था गट्टू



अट्टू और गट्टू घूमने चले,



घूमते घामते पहुँचे जंगल में।



जंगल में देखा छोटा-सा झुरमुट
छोटी-सी बेल और बड़ा-सा पेड़।



पेड़ पे चढ़ना नहीं आया!



जंगल में देखा छोटा-सा पोखर
छोटा-सा झरना और बड़ी-सी झील।



पानी में तैरना नहीं आया!



चलते-चलते देखी छोटी-सी टेकरी
छोटा-सा टीला और बड़ा-सा पहाड़।



पहाड़ पे चढ़ना नहीं आया!



जंगल में सुनी एक सियार की आवाज़
एक बाघ की पुकार, एक शेर की दहाड़।



डर के मारे भाग न सके!



अट्टू और गट्टू बहुत डरे
रोने लगे, दौड़ने लगे।



घर की राह सूझे ना!



उधर से आए घोड़ेदादा
टप-टप-टप-टप घोड़ेदादा।



अट्टू-गट्टू बैठे घोड़े पर!



अट्टू और गट्टू हँसने लगे
टप-टप-टप चले घोड़े पे सवार!

अट्टू-गट्टू

एक था अट्टू
एक था गट्टू

अट्टू और गट्टू घूमने चले,
घूमते घामते पहुँचे जंगल में।

जंगल में देखा छोटा-सा झुरमुट
छोटी-सी बेल और बड़ा-सा पेड़।
पेड़ पे चढ़ना नहीं आया!

जंगल में देखा छोटा-सा पोखर
छोटा-सा झरना और बड़ी-सी झील।
पानी में तैरना नहीं आया!

चलते-चलते देखी छोटी-सी टेकरी
छोटा-सा टीला और बड़ा-सा पहाड़।
पहाड़ पे चढ़ना नहीं आया!

जंगल में सुनी एक सियार की आवाज़
एक बाघ की पुकार, एक शेर की दहाड़।
डर के मारे भाग न सके!

अट्टू और गट्टू बहुत डरे
रौने लगे, दौड़ने लगे।
घर की राह सूझे ना!

उधर से आए घोड़ेदादा
टप-टप-टप-टप घोड़ेदादा।
अट्टू-गट्टू बैठे घोड़े पर!

अट्टू और गट्टू हँसने लगे
टप-टप-टप चले घोड़े पे सवार!

क्वेस्ट (क्वालिटी एज्युकेशन सपोर्ट ट्रस्ट) हरेक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके इसके लिए काम करने वाली स्वयंसेवी संस्था है। क्वेस्ट महाराष्ट्र के ठाणे और नंदुरबार ज़िले के आदिवासी बच्चों के साथ पिछले चार साल से काम कर रही है। बच्चों को पसन्द आए ऐसी किताबें तैयार करने का काम क्वेस्ट ने अपने हाथों में लिया है। उन किताबों में से एक है यह किताब।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले तीन दशकों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे से व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर) तथा *शैक्षणिक संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान, बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्रियाँ आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

जंगल की सैर के
बारे में एक मज़ेदार
पारम्परिक कथा।



parag

AN INITIATIVE OF

CHILD FUND



एकलव्य

मूल्य: ₹ 50.00



9 789381 337714